

पौने छह फीट लंबा कद । पतला-सा सुता हुआ शरीर । गेहुँआ रंग । लंबी गर्दन । गले में काले डोरों की रुद्राक्ष गुँथी माला । दोनों कान छिदे हुए । कान के इन छिद्रों से हवा आए-जाए । सिर पर बँधे तौलिया के फेंटे तले कंधों पर गिरती सुनहरी बालों की रूखी-सूखी लटें । दबे चेहरे पर कुन्ही (मुरा) भैंस के घुंडी खाए सींगों-सी छल्ला मूँछें । मैल चढ़े पैरों तले हवाई चप्पलें । वह चौखाना की बिन धुली लुंगी बाँधे था । ऊपर बिना प्रेस की मुड़ी-मुड़ी-सी कमीज थी । उसके दाएँ हाथ पर लछीनाथ सपेरा गुदा हुआ था । वह देखते ही घुमक्कड़ जनजाति की इकाई लगता था ।

सूरज दो-तीन बाँस ऊपर चढ़ आया था । मई की चटक धूप सुबह से ही अपने तेवर दिखाने लगी थी । फटे तहमद के झरोखों से छिटककर अंदर आती धूप डेरे में बिखरी हुई थी । लछीनाथ ने अंदर आ गई धूप की ओर टकटकी बाँधकर देखा ।

भोर !

पूर्वांचल से उठती भानूदय की लालिमा के आगमन पर अवनि पलक-पावड़ा बिछाए थी । प्रभात का सुनहरा समीर, जल की बूँद-बूँद, धरा के कण-कण, पेड़-पौधों के पात-पात और बेल-वल्लरी के रोएँ-रोएँ में बसा था ।

लछीनाथ को सुबह मुँह अँधेरे उठने की बान-सी पड़ी हुई थी । उसके बाप सरूपनाथ की भी यही आदत थी । प्रातः उठना उसका संस्कार था । शिशु सूर्य के मखमली उजास में उसकी नजरें एक अप्रत्याशित देखने को ठहर गई थीं ।

उसके पास एक शिकारी श्वान था । सूत की रस्सी-सा सुता शरीर । दंतैल । लंबा मुँह । लंबी पूँछ । पीठ-पेट एक । दोनों बगल पसलियाँ खड़ी थीं, बाँस की खप्पचियों-सी । उनको गिन लो एक-एक । नाम था शेरू ।

उसका वही श्वान शेरू, मृग शावक को घेरे हुए बैठा था । बच्चा भागने की चेष्टा करता, कुत्ता दाढ़ें निपोरकर उसमें भय भर देता था । खूँखार कुत्ते के सामने मासूम बच्चे का समूचा शरीर पवन में हिलते पत्ते की तरह काँप रहा था । हारे को हरिनाम । बेचारे शिशु ने जैसे मौत को अपनी नियति मान लिया था ।

लछीनाथ ने अपने स्वामिभक्त कुत्ते को दाद दी । मेरा शेरू शातिर शिकारी तो है ही, वफादारी भी खूब है इसमें ।

उसने फाहे-जैसे मुलायम हिरण के उस बच्चे की ओर काक-दृष्टि से ऐसे देखा मानो वह उसके मनपसंद भोजन का निमित्त हो । उसके अंतस से भूख की

परिचय

जन्म : ६ जनवरी १९५६ जयपुर (राजस्थान)

परिचय : रत्नकुमार सांभरिया जी ने लघुकथा, कहानी, एकांकी, अनुवाद आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। आपकी रचनाएँ प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

प्रमुख कृतियाँ : काल तथा अन्य कहानियाँ, हुकुम की दुग्गी आदि (कहानी संग्रह), समाज की नाक (एकांकी संग्रह), प्रतिनिधि लघुकथा शतक (लघुकथा संग्रह), डॉ. आंबेडकर : एक प्रेरक जीवनी का अरबी और सिंधी भाषा में अनुवाद ।

गद्य संबंधी

चित्रात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना के रोचक, प्रवाही वर्णन को कहानी कहते हैं । इसमें पात्र अथवा चरित्र का अत्यधिक महत्त्व होता है । कहानी कहते या पढ़ते समय जब उस घटना/प्रसंग का चित्र उभर आता है तो वहा चित्रात्मक कहानी होती है ।

प्रस्तुत कहानी में सांभरिया जी ने कठोर हृदय की सहृदयता और अपने प्रति किए गए उपकार के प्रतिदान का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है ।



ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित
कोई लोककथा पढ़िए।

भख का भपारा-सा निकला। यदि मन में लालच हो तो उतावली लाजिमी है। शिकार छूट न जाए, प्रमुदित हुआ वह भागा-भागा गया। झोंपड़ी की बाती में खुँसा छुरा उसने निकाल लिया था। वह छुरा लिए शावक के पास आ बैठा था।

शिकारी और शिकार। घोड़ा और घास। ना घोड़ा घास से यारी निभा सके, ना शिकारी शिकार को नूर सके। लछीनाथ ने शावक की गर्दन पकड़ कर खंजर सँभाला।

निरीह शावक। खुँटियाते सींग। आकाश देखते कान। मींह-मींह सुरमई नयन। भूरे रंग पर सफेद छिटके। चाम के भीतर दसेक किलो की देह। रोम-रोम बेचारगी। तन-बदन बेसहारगी। छुरा का अर्थ पक्षी का चीकला (बच्चा) भी जानता है, वह तो मृग-शावक था। उसने आँखें मूँद ली थीं और अपनी इहलीला समाप्त होने के डर से लंबी-लंबी साँसें लेने लगा था।

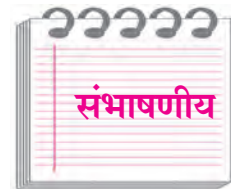
लड़कपन का झोंक था। हिरणी का यह शावक इधर-उधर मुँह मारता, कूदता-फाँदता, हुमकता, हँसता-खेलता, कुलाँचे भरता डेरों की ओर आ निकला था। कुल्ले ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया था। रात का तीसरा प्रहर बीत रहा था। उसी समय से खेत में हिरणी ममता के वशीभूत खड़ी थी। इधर उसका शावक कुल्ले के सामने अवश था।

ऊपर की उस खेत से किसी जानवर के खों-खों कर धाँसने की ध्वनि सुनाई दी। ध्वनि में गिड़गिड़ाहट जैसा दयनीय पुट था। वह क्रूरता की पराकाष्ठा का ध्यान अपनी ओर खींच ले गई थी।

शावक की गर्दन से छुरा हटा कर लछीनाथ उठ खड़ा हुआ था। उसने आवाज की ओर कनखी से निहारा। खेत परती पड़ा था। खेत में जहाँ-जहाँ कंटकमय झाड़ियाँ थीं। सीना सवानी लंबी-लंबी सूखी घास खड़ी हुई थी। उस घास के बीच हिरणी जैसा कोई जीव उसे खड़ा दिखाई दिया। जब तक साँस, तब तक आस। हिरणी ने खों-खों-खों करते जैसे फिर आप-आप की, मानो कहती हो 'यह बच्चा मेरी वंशबेल है, इसे मत मारो। मैं ढलती उम्र हूँ। आप मेरा गला रेत लें।'।

लछीनाथ ने गौर से देखा। हिरणी ही थी। वह इस विश्वास से बँधता चला गया था कि हो न हो यह उसी हिरणी का बच्चा है। वह वहाँ खड़ी इसके प्राणों की भीख मुझसे माँग रही है। एकाएक उसे तीन बरस पहले का वह दिन स्मरण हो आया था। ऊपर के उन्हीं खेतों से आया एक भेड़िया झोंपड़ी के सामने सोई उसकी तीन महीने की बच्ची को उठाकर जंगल में भाग गया था। भेड़िये की खोज लेते उसकी खोह में बच्ची तो मिल गई थी लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका था।

बच्ची की माँ की हालत महीनों पागल जैसी रही थी। माँ हिरणी...



पालतू जानवरों की देखभाल
संबंधी चर्चा कीजिए।



‘जंगल में रहने वाले पशु प्रकृति की गोद में ही स्वच्छंदता से पलते हैं’, इसपर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उसका हृदय विदीर्ण हो आया था। उसने छुरा वहीं जमीन में गाड़ दिया था। स्नेहिल हाथों उसने बच्चे को गोदी में उठा लिया था। वह कदम-कदम उधर बढ़ता चला गया, जहाँ उसकी माँ खड़ी हुई थी। उधर शावक को लेकर लछीनाथ खेत की ओर बढ़ा था और इधर श्वान छुरे को मुँह में भर कर झोंपड़ी की ओर चला आया था।

बालक का जी माँ की आत्मा में बसता है। जिस माँ का बच्चा मौत के मुँह में हो, उसे अमन कहाँ। हिरणी की साँसें जैसे उसके फेफड़ों और पसलियों में ही सिमटी हुई थीं। ममता की अदृश्य डोर से बँधी हिरणी वहाँ आड़ी देकर खड़ी हुई थी। बच्चे को लेकर लछीनाथ खेत में पहुँच गया था। तृण-सागर में खड़ी हिरणी कनौतियाँ उठाए एक साँस उधर ही देखे जाती थी। एकदम उदास, हताश, शोक-संतप्त-सी, क्लान्त। मानो वह शरीरी नहीं, स्थापित संगमरमरी हो।

अकस्मात् लछीनाथ की निगाहें दूसरी ओर घूर्मीं। वह सहमकर रह गया था। पाँच-छह शृंगालों का एक झुंड हिरणी से थोड़ी दूरी बनाए खड़ा था। सियार यह उम्मीद बाँधे थे कि मृतप्राय है हिरणी, उसकी साँसें टूट जाएँगी और उनका भोग-भक्षण होगा। लछीनाथ ने धरती पर पाँव की धमक के साथ उनको हटका दिया था। गीदड़ को कायर का पर्याय कहा जाता है। धमक, आदमी की रूह नजर पड़ते ही वे सब-के-सब सिर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए थे।

* लछीनाथ ने बच्चा हिरणी के पास छोड़ दिया था। बुझते दीपक में तेल डालते ही उसकी लौ फिर प्रकाशमान होने लगती है, सुध-बुध खोई हिरणी में जैसे फिर जीवन-ज्योति प्रज्वलित होने लगी थी। वह चैतन्य और चौकस हो गई थी। जंगल विहरनी की आँखों से टप-टप दो-तीन बूँदें गिरिं। सर्द आँसुओं में अब वेदना नहीं, खुशी का भाव झलक रहा था। हिरणी ने लछीनाथ की ओर ऐसे देखा मानो वह कोई इनसान नहीं फरिश्ता हो। हिरणी ने बच्चे को दूसरी ओर अपनी बगल में ले लिया था और वहीं खड़ी रह गई थी। लछीनाथ को विस्मय हुआ। अपना टाबर पा जाने के बाद तो हिरणी को कुलाँचे मारते यहाँ से भाग खड़ा होना चाहिए था। यह तो खड़ी मेरी ओर ही लखे जाती है। *

जंगली जानवरों की भी अपनी बोली-भाषा, हक-हकूक हुआ करते हैं। कई बार यही बातें उनके बीच झगड़े-टंटों का हेतु बन जाया करती हैं। महीना पहले हरी घास की चूँट की तनिक-सी रार को लेकर दो हिरणी आपस में भिड़ गई थीं, सींग-सींग। क्रोध हर जीव में दुबका होता है और मौका पाते ही वह हिंसक हो जाता है। दोनों हिरणियों ने एक-दूसरी को मात देने के लिए अपनी जान फूँक दी थी। उस दिन की लड़ाई-भिड़ाई में



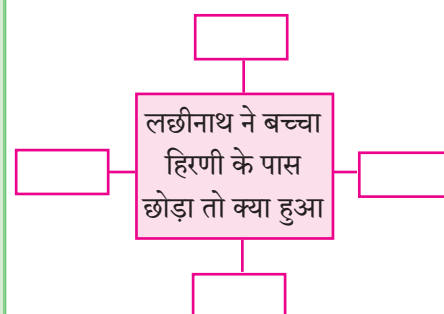
‘वनों पर सबसे पहला अधिकार पशुओं का’ इस विषय पर चर्चा करते हुए अपना मत लिखिए।



प्रकृति से संबंधित एक कविता सुनिए तथा उसका आशय सुनाइए।

* सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए।

(१) कृति पूर्ण कीजिए।



(२) ‘क्रोध हर जीव में दुबका होता है’, इसपर अपना मत लिखिए।

इस हिरणी के एक सींग ने जगह छोड़ दी थी। सींग जड़ उखड़े पौधे की भाँति कई दिन हिलता रहा था। बीस-पच्चीस दिन बाद शनैः-शनैः फिर जड़ पकड़ने लगा था।

हिरणी ने आव देखा न ताव, उस सींग पर अपने खुर का तीखा प्रहार कर उसे तोड़ पटका था। सहृदय को नाचीज की ओर से इनाम। अपने शावक को साथ लिए वह उल्लसित मन उछलती, कूदती, छलाँगें भरती घास-झाड़ियों में अंतर्धान हो गई थी।

लछीनाथ की नजर धरती पर टूटे पड़े हिरणी के सींग पर गई। उठाते हुए उसे अपनी दिवंगत माँ याद हो आई थी। उनके घर किसी जमाने का हिरणी का सींग हुआ करता था। जब भी उनके डेरे उठते माँ अपने थैले में रखे उस सींग को हाथ में लिए चलती थी।

वह सरसों के तेल के दिए की लौ को लोहे के पतरे पर रोक कर इकट्ठा कर लेती थी। मधुमक्खी के छत्ते की भाँति पतरे से लटकी कालिख खुरच वह उसे काँसे के कटोरे में डाल हिरण के उस सींग से घिस-घिस काजल तैयार किया करती थी। वह काजल पूरे डेरों में बँटता था, मासा-मासा।

घुमक्कड़ों का क्या ठौर ? क्या ठिकाना ? डेरा उठाते-जमाते लछीनाथ से वह सींग कहीं गुम हो गया था। हिरणी के इस सींग को घर लाते जैसे काजल तैयार करती उसकी माँ साक्षात् हो गई थीं। उसके मन में विचार घुमड़ा अब वह इसी सींग का घिसा काजल काम में लेगा। उसकी आँखें कम सूझती हैं। वस्तुएँ पकड़ने में दिक्कत होती है। उसने सींग को झोंपड़ी की बाती में खोंस दिया था।

कुत्ते ने वह छुरा चौक में लाकर पटक दिया था। लछीनाथ ने चौक में पड़ा छुरा उठाया और दूर नाले में फेंक आया।

—०—



अंतरजाल से 'ताड़ोबा अभयारण्य' की जानकारी निम्न मुद्दों के आधार पर प्राप्त कीजिए।

स्थान	क्षेत्र	विशेषताएँ
-------	---------	-----------



'जंगल के पशु मानवी बस्ती की ओर आ रहे हैं' इसपर आपके उपायों की सूची बनाइए।

शब्द संसार

घुमक्कड़ (वि.) = घुमंतू
भानूदय (पुं.सं.) = सूर्योदय
शातिर (पुं.अ.) = चालाक
अंतस (पुं.सं.) = हृदय
लाजिम (वि.अ.) = उचित
सुरमई (वि.फा.) = हल्का नीला रंग

मुहावरे

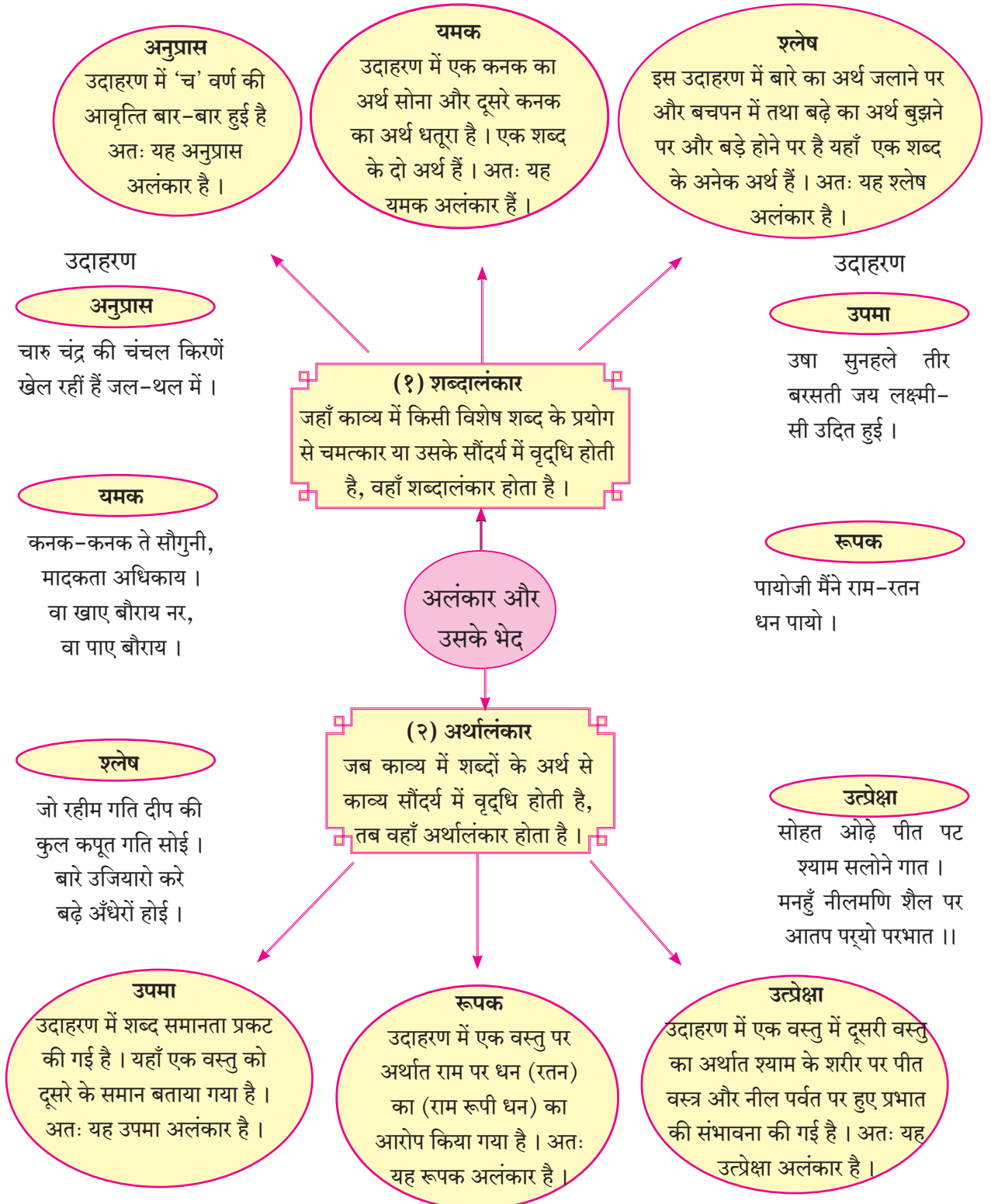
पलक पाँवड़ा बिछाना = आदरयुक्त स्वागत करना
प्रमुदित होना = आनंदित होना
वशीभूत होना = आधीन होना



.....

.....

.....



(२) अलंकार के भेदों सहित अन्य एक-एक उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।